



शिक्षक के व्यवहार की अवधारणा एवं बीएड प्रशिक्षण संस्थान के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का
अध्ययन

प्रेरणा गर्ग

शोधार्थी निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर

डॉ. हरीश कंसल,

प्रोफेसर, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

शिक्षक, व्यवहार, प्रशिक्षण,
संस्थान, छात्रों, मानसिक
स्वास्थ्य

ABSTRACT

मानसिक स्वास्थ्य एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के बाकी लोगों के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध का समतापूर्ण सुधार है। यह केवल एक व्यक्ति और दूसरों के बीच के बंधन की चिंता नहीं है, बल्कि व्यक्ति और उसके समुदाय, उसके समाज और उसके और उसकी सामाजिक संस्थाओं के बीच भी बंधन की चिंता है जो उसे एक अच्छा जीवन जीने, अन्य लोगों के साथ मिलकर काम करने में मदद करती है। व्यवहार व्यक्ति के व्यक्तित्व का दर्पण होता है। यह क्रियाशील व्यक्तित्व है। प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक के अपने छात्रों के साथ संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। शिक्षकों का अपने विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण, दयालु, प्रेमपूर्ण, स्नेहपूर्ण, संवेदनशील और निष्पक्ष व्यवहार अच्छा तालमेल स्थापित करता है और शिक्षक की प्रभावशीलता में एक महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की विशिष्टता की चिंता करते हुए उनके प्रति उचित सम्मान दिखाना चाहिए। उद्देश्यपूर्ण शिक्षण-अधिगम स्थिति के लिए शिक्षकों का

निरंतर सुदृढ़ और गर्मजोशी भरा रवैया आवश्यक है। छात्रों की रुचियों और योग्यता पर काम करना और छात्रों को सीखने के लिए आरंभ करना और प्रेरित करना उत्तम शिक्षक व्यवहार सुनिश्चित करता है।

परिचय

मानसिक स्वास्थ्य पर शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और सामाजिक कल्याण की स्थिति :

स्वास्थ्य को समग्र शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और सामाजिक कल्याण की स्थिति के रूप में परिभाषित किया गया है और यह केवल बीमारी और बीमारियों की कमी नहीं है। कई वर्षों से यह कहावत हर कोई आदर्श रूप से अपना रहा है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ दिमाग हो। महान भारतीय संतों ने अचेतनता और अज्ञानता पर अधिक जोर दिया है, जिसमें विभिन्न प्रकार की अतृप्त इच्छाएं और इच्छाएं छिपी होती हैं, जो व्यक्ति को दुखों की दुनिया में खोए रखती हैं। मन पर काबू पाकर व्यक्ति स्थिरता और लचीलेपन की सर्वोच्च सीढ़ी हासिल कर सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के बाकी लोगों के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध का समतापूर्ण सुधार है। यह केवल एक व्यक्ति और दूसरों के बीच के बंधन की चिंता नहीं है, बल्कि व्यक्ति और उसके समुदाय, उसके समाज और उसके और उसकी सामाजिक संस्थाओं के बीच भी बंधन की चिंता है जो उसे एक अच्छा जीवन जीने, अन्य लोगों के साथ मिलकर काम करने में मदद करती है। अपने खाली समय का उचित प्रबंधन करें और अपनी आय प्राप्त करने के लिए और उन वस्तुओं पर व्यय करें जो आवश्यक हैं और जिस तरह से वह अपनी खुशी, संतुलन और सुरक्षा को देखता और समझता है।

1 मानसिक तंदुरुस्ती

मानसिक स्वास्थ्य का सिद्धांत अस्थिर है, जहां किसी व्यक्ति की मानसिक स्थिति को कई संभावित महत्व दिया जा सकता है। मानसिक खुशहाली को आम तौर पर एक सकारात्मक गुण कहा जा सकता है, जहां उस व्यक्ति द्वारा मानसिक सुदृढ़ता का उच्च स्तर प्राप्त नहीं किया जाता है, भले ही उस व्यक्ति द्वारा कोई संकेत या लक्षण नहीं दिखाए जाते हैं और न ही उसे मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति के रूप में पहचाना जाता है। मजबूत भावनात्मक सेटअप, प्रियजनों के साथ एक अच्छा जीवन बनाए रखने की क्षमता और जीवन की अप्रत्याशित और अपरिहार्य स्थितियों से निपटने के लिए लचीलेपन के साथ रचनात्मक जीवन जीने पर मानसिक स्वास्थ्य की स्थिर स्थिति पर जोर दिया जाता है। सकारात्मक मनोविज्ञान मनोविज्ञान का एक प्रमुख एवं प्रसिद्ध अनुशासन बन गया है।

2 रोकथाम

मानसिक बीमारी की अनुपस्थिति को सरल शब्दों में मानसिक कल्याण कहा जा सकता है। आजकल मानसिक विकारों की रोकथाम पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है, क्योंकि इलाज की तुलना में रोकथाम कहीं बेहतर और आसान है। इस रोकथाम से निश्चित रूप से बच्चे के भावी जीवन में मानसिक बीमारी से गुजरने की संभावना कम हो जाएगी। विभिन्न समाजों, विभिन्न समूहों, संगठनों और विभिन्न व्यवसायों में मानसिक स्वास्थ्य के सिद्धांत और इसकी प्रकृति और इसके कारणों को तैयार करने के नए और विविध तरीके हैं, क्योंकि यह सामाजिक रूप से निर्मित और सामाजिक रूप से अलग अवधारणा है।

बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक

ऐसे कई कारक हैं जो बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। माता-पिता और पारिवारिक जीवन, समुदाय और स्कूल प्रथाओं का प्रभाव बच्चे के व्यक्तित्व या मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। इन प्रभावों के मुख्य कारकों और क्षेत्रों का आरेखीय प्रतिनिधित्व निम्नलिखित है :

1 आत्मविश्वास पैदा करना

उन लोगों को समर्थन देना जिनमें आत्मविश्वास की कमी है, डरपोक लोगों को आश्वस्त करना, उनके विचारों को अस्वीकार नहीं बल्कि पुनर्निर्देशित करना, समाधान खोजने में मदद करना, विचारों को विस्तृत करने और अपने अनुभवों को बताने का मौका देना आदि।

2 बच्चों की आकांक्षाओं को बढ़ाना

केवल उसी चीज़ की आवश्यकता है जिसके लिए एक छात्र सक्षम है या उससे थोड़ा अधिक, उसे चुनौती देना, नई संभावनाओं को खोलना, व्यंग्य और उपहास को रोकना, बच्चे को अपने व्यक्तित्व के सकारात्मक पक्ष से अवगत कराना इत्यादि।

3 सकारात्मक भावनाओं का विकास करना

बच्चे पर विश्वास दिखाना, उसकी बात ध्यान से सुनना, उसके विचारों को स्वीकार करना, बच्चे को क्षमता हासिल करने में मदद करना, उसके साथ धैर्य रखना और ऐसी अन्य गतिविधियाँ।

4 संचार कौशल विकसित करना

बच्चे की राय और अनुभव जानना, उसे अपने नए अनुभवों की पिछले अनुभवों से तुलना करने और निष्कर्ष और सामान्यीकरण निकालने का अवसर देना।

5 सामाजिक जिम्मेदारियाँ

उसके साथ और उसके लिए सीमाएँ निर्धारित करना, सार्वजनिक मानदंडों के साथ मानकों को स्पष्ट करना, बच्चे को विभिन्न सामाजिक समूहों के मानदंडों से अवगत कराना, इन मानदंडों के आलोक में उसके व्यवहार का विश्लेषण करने में उसकी मदद करना, दूसरों के लिए जिम्मेदारी देना, उसे भेदभाव के साथ मूल्यांकन करने में मदद करना और विकास के लिए समान सामाजिक गतिविधियाँ प्रदान करना।

अध्ययन का उद्देश्य

1. मानसिक स्वास्थ्य पर शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और सामाजिक कल्याण की स्थिति का अध्ययन
2. शिक्षक के व्यवहार की अवधारणा का अध्ययन

शिक्षक के व्यवहार की अवधारणा

व्यवहार व्यक्ति के व्यक्तित्व का दर्पण होता है। यह क्रियाशील व्यक्तित्व है। प्रभावी शिक्षण—अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक के अपने छात्रों के साथ संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। शिक्षकों का अपने विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण, दयालु, प्रेमपूर्ण, स्नेहपूर्ण, संवेदनशील और निष्पक्ष व्यवहार अच्छा तालमेल स्थापित करता है और शिक्षक की प्रभावशीलता में एक महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की विशिष्टता की चिंता करते हुए उनके प्रति उचित सम्मान दिखाना चाहिए। उद्देश्यपूर्ण शिक्षण—अधिगम स्थिति के लिए शिक्षकों का निरंतर सुदृढ़ और गर्मजोशी भरा रवैया आवश्यक है। छात्रों की रुचियों और योग्यता पर काम करना और छात्रों को सीखने के लिए आरंभ करना और प्रेरित करना उत्तम शिक्षक व्यवहार सुनिश्चित करता है।

डॉ. डी. रयान ने शिक्षक व्यवहार की अवधारणा को अपने अनूठे तरीके से कुशलतापूर्वक समझाया। उन्होंने शिक्षक व्यवहार का एक सिद्धांत प्रतिपादित किया है। एम. मेक्स और बी.ओ. स्मिथ के शब्दों में शिक्षक के व्यवहार की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है कि शिक्षक का व्यवहार शिक्षक की उन गतिविधियों से बना होता है जिन्हें वह आमतौर पर कक्षा में निष्पादित करती है ताकि शिक्षण—सीखने की प्रक्रिया को आसान और व्यवहार्य बनाया जा सके। छात्रों के लिए। यह शिक्षक व्यवहार सिद्धांत इससे जुड़े नियमों और कारकों के संबंध को भी समझाता है। यह दो अभिधारणाओं पर आधारित है :

1 शिक्षक के व्यवहार के पहलू

स्वस्थ वातावरण के निर्धारण में शिक्षकों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सामाजिक व्यवस्था के एक भाग के रूप में कॉलेज अपने घटकों के बीच एक से एक सहयोग की अनुमति देता है; किसी संस्थान के शिक्षक एक—दूसरे के साथ समन्वय करते हैं, प्रिंसिपल, छात्रों और अभिभावकों के साथ समन्वय करते हैं। संस्थागत माहौल शिक्षकों के एक—दूसरे और दूसरों के साथ समन्वय के तरीके से

निर्धारित होता है और यह कक्षा के माहौल को भी निर्धारित करता है। विद्यार्थियों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध विकसित करना शिक्षक के हाथ में है ताकि सीखने में आसानी हो। हैल्पिन (1966) ने शिक्षक के व्यवहार की चार प्रमुख विशेषताएं बताई हैं और ये विशेषताएं किस प्रकार कक्षा और संस्थान के माहौल को प्रभावित करती हैं। ये विशेषताएँ इस प्रकार हैं

2 विघटन

डिसएंगेजमेंट का मतलब है जिस संस्थान, कॉलेज जहां शिक्षक काम करता है, उसके प्रति प्रतिबद्धता की कमी। ऐसे विच्छेदित कॉलेज में, शिक्षक स्वयं को छोटे-छोटे मुद्दों में उलझा सकते हैं। वे अपने पर्यवेक्षक या प्रमुख को नापसंद कर सकते हैं और संस्थान के प्रमुख की निंदा भी कर सकते हैं। जिस तरह से वे एक-दूसरे से जुड़ते हैं वह वास्तव में उनके अरचनात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। होय और सबो (1998) ने इन शिक्षकों को ऐसे व्यक्तियों के रूप में वर्गीकृत किया है जो केवल अपना कीमती समय बर्बाद कर रहे हैं। वे प्रिंसिपल के प्रयासों को नुकसान पहुंचाते हैं और कॉलेज में अप्रिय और अस्वास्थ्यकर माहौल पैदा करते हैं। इसके विपरीत, जिन कॉलेजों में अलगाव की स्थिति कम है या ऐसा माहौल है, जहां आम तौर पर सभी शिक्षक एक समूह के रूप में अपना काम करते हैं और अपने काम के प्रति ईमानदारी से समर्पित होते हैं। ऐसे शिक्षक एक-दूसरे को उचित सम्मान देते हैं और संपूर्ण विशेषज्ञ के रूप में कार्य करते हैं। प्राचार्य के नकारात्मक एवं अवांछनीय व्यवहार से शिक्षकों का प्रदर्शन एवं कार्य के प्रति लगाव बिल्कुल भी प्रभावित नहीं होता है। ऐसे शिक्षक प्राचार्य की कमजोर निरंकुशता के बावजूद रचनात्मक, गतिशील और फलदायी साबित होते हैं। एक असंतुष्ट शिक्षक छात्रों की जरूरतों को पूरी तरह से पूरा नहीं कर सकता है और बच्चा उपेक्षित महसूस कर सकता है।

3 बाधा

कुछ शिक्षकों का कागजी काम और गैर-अनुदेशात्मक काम के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण, जिसका अर्थ है शिक्षण के अलावा अन्य गतिविधियाँ, को संक्षेप में बाधा कहा जा सकता है। शिक्षकों को लगता है कि उनका दैनिक कार्य और टीम की आवश्यकताएं शिक्षण की जिम्मेदारी में बाधा बनती हैं। वे सभी कागजी काम को नापसंद करते हैं, अनिवार्य रूप से लॉग बुक भरना, उपस्थिति रजिस्टर बनाए रखना, छात्रों के परीक्षण परिणामों को नोट करना और गणना करना और परीक्षाओं में अपने बच्चों के प्रदर्शन के बारे में अभिभावकों के साथ जुड़ना और बातचीत करना। ऐसे माहौल में, जहां शिक्षकों को लगता है कि उन्हें कागजी काम और अन्य प्रशासनिक कर्तव्यों जैसे आवश्यक कार्यों से कहीं अधिक काम करना पड़ता है, शिक्षण सीखने की प्रक्रिया बुरी तरह प्रभावित होती है। यह शिक्षा की प्रक्रिया को प्रतिबंधित करता है। प्रिंसिपल के साथ बहस और टकराव से बचने के लिए शिक्षक अनिच्छा से अपना काम करते हैं। बिस्तर। पाठ्यक्रम के लिए शिक्षक की ओर से बहुत अधिक कागजी कार्रवाई की आवश्यकता होती है। ऐसे शिक्षक छात्र की उत्तर पुस्तिकाओं को सही करते समय या ग्रेड और ग्रेड पॉइंट दर्ज करते समय पूर्ण न्याय नहीं कर सकते हैं। इससे ठ.मक वालों का

दिमाग भी ख़राब हो सकता है. शिक्षक प्रशिक्षु.

4 एस्पि़ट

एस्पि़ट शिक्षकों की सामाजिक और व्यावसायिक आवश्यकताओं की संतुष्टि का वर्णन करता है। एक ऐसे संस्थान में जो उच्च स्तर के उत्साह और उपलब्धियों से युक्त है, शिक्षक एक-दूसरे के साथ बहुत अच्छे से समन्वय करते हैं और समर्पण और खुशी के साथ अपना काम करते हैं। समूह के सदस्यों के रूप में वे एक-दूसरे से प्यार करते हैं और उनका सम्मान करते हैं। दूसरों की संगति का आनंद लिया जाता है, इसलिए काम सौहार्दपूर्ण ढंग से किया जाता है और वे उच्च कार्य प्रतिबद्धता दिखाते हैं। ऐसे शिक्षक हमेशा ऊर्जावान, रचनात्मक होते हैं और जहां भी आवश्यक हो वे जरूरतमंदों को तत्परता से सहायता प्रदान करते हैं। जबकि निचले स्तर के उत्साह की विशेषता वाले संस्थानों के मामले में, शिक्षक अनिच्छा और अनिच्छा से अपना कार्य करते हैं। इस शिक्षक को अपने काम में संतुष्टि की कमी है। वे बिना किसी समर्पण और प्रतिबद्धता के केवल अपनी आजीविका के लिए काम करते हैं। कम उत्साह वाले शिक्षकों द्वारा उत्पन्न ऐसा माहौल एक अस्वास्थ्यकर स्थिति का निर्माण करता है। ऐसी स्थिति जहां शिक्षक-प्रशिक्षक अपने काम से संतुष्ट नहीं होंगे, वे अच्छे मानसिक स्वास्थ्य से वंचित होंगे। मानसिक रूप से विक्षिप्त शिक्षक-शिक्षिकाएं मानसिक रूप से विक्षुब्ध बीएड शिक्षक तैयार करेंगे।

5 अंतरंगता:

अंतरंगता से तात्पर्य उस प्रकार के संबंधों से है जो किसी संस्थान में शिक्षकों के बीच प्रचलित है। शिक्षकों के बीच सुरक्षित और अच्छे संबंध उच्च घनिष्ठता से परिलक्षित होते हैं। उच्च घनिष्ठता वाले कॉलेज में शिक्षक एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते हैं। वे एक-दूसरे के साथ विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान भी करते हैं। इतना अच्छा रिश्ता कभी कॉलेज गेट तक ही नहीं रुकता बल्कि उससे आगे बढ़ जाता है। वे कॉलेज परिसर के भीतर और बाहर अक्सर मिलते-जुलते रहते हैं। ऐसे शिक्षक आवश्यक समय पर पारस्परिक सहायता और भावनात्मक समर्थन प्रदान करते हैं, वे अक्सर एक-दूसरे के यहाँ जाते हैं, रिश्तेदारों से परिचित होते हैं। वे कठिन और जटिल परिस्थितियों में एक-दूसरे के साथ खड़े रहते हैं। वे सबसे करीबी दोस्त बन जाते हैं। ऐसी व्यवस्था में भावनात्मक और मनोदैहिक इच्छाएँ पूरी होती हैं। चूँकि उन्हें कुशलतापूर्वक प्रदर्शन करने के लिए आवश्यक मजबूत समर्थन का आशीर्वाद प्राप्त है, वे खुश और संतुष्ट हैं और इससे माहौल सकारात्मक हो जाता है। एक शिक्षक-शिक्षक जो अपने छात्रों के साथ अच्छा तालमेल विकसित करने में सक्षम है, वह छात्रों की गड़बड़ी और समस्याओं के कारण तक पहुंच सकता है और उन्हें सुधारने के लिए उपचारात्मक कदम प्रदान कर सकता है। इस प्रकार वह अपने छात्रों का अधिक सही ढंग से मार्गदर्शन कर सकता है।

बच्चे स्कूलों और कॉलेजों में काफी समय बिताते हैं। वे दिन में काफी देर तक स्कूल में शिक्षकों,

कर्मचारियों और अन्य बच्चों के संपर्क में रहते हैं। बच्चों पर स्कूल, कॉलेज, शिक्षकों और अन्य विद्यार्थियों का बहुत प्रभाव पड़ता है। स्कूल और कॉलेज बच्चों के बड़े होने के भावनात्मक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक पहलुओं की मजबूत नींव रखते हैं। शिक्षक इन बच्चों के परिजनों से भी संपर्क में हैं। यह उनके लिए एक फायदा है क्योंकि वे समस्याग्रस्त व्यवहार वाले बच्चों की मदद करने के अपने प्रयास में परिवारों के साथ मिलकर काम कर सकते हैं और इस प्रकार मानसिक बीमारी के जोखिम को कम कर सकते हैं। शिक्षकों को बच्चों के लिए अच्छे मार्गदर्शक और रोल मॉडल के रूप में कार्य करना चाहिए। स्कूल मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रमों के लिए विस्तारित अवधारणा की आवश्यकता होती है और पाठ्यक्रम शिक्षण और सीखने और स्कूल संस्कृति और पर्यावरण के बीच समन्वित कार्रवाई को शामिल करते हुए एक मानक कार्यान्वयन दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। कठिनाइयों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और दूसरों के सुधार और उत्थान के लिए अत्यधिक समर्पण वाला एक शिक्षक किसी भी बाधा के बावजूद अद्भुत काम कर सकता है। एक सशक्त बच्चा गंभीर परिस्थितियों में भी उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करके जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होता है। ऐसे बच्चों का निर्माण ही शिक्षा का उद्देश्य है। और शिक्षक अपने स्नेहपूर्ण और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से इस उद्देश्य को प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि वे ऐसे बच्चों के निर्माता हैं। आइए हमारी शिक्षा प्रणाली इस लक्ष्य को प्राप्त करने में शिक्षकों की मदद करे।

निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन में बीएड प्रशिक्षण संस्थानके छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर माता-पिता की भागीदारी का महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया है। जिन छात्रों में अभिभावकों की भागीदारी अधिक होती है, उनमें मानसिक स्वास्थ्य कम अभिभावकों की भागीदारी वाले छात्रों की तुलना में अधिक होता है। इंटरमीडिएट स्तर पर अपने पाठ्यक्रमों का चयन करते समय छात्रों को उचित परामर्श की आवश्यकता होती है। माता-पिता को बच्चे की रुचि और योग्यता पर विचार करना चाहिए न कि पाठ्यक्रम के चयन पर थोपना चाहिए। पारिवारिक माहौल अनुकूल होना चाहिए और सीखने की प्रक्रिया को आनंददायक बनाना चाहिए और माता-पिता को इसे किशोरों के लिए तनावपूर्ण घटना बनाने से बचना चाहिए। अंततः छात्रों को अपने शैक्षणिक जीवन में प्रगति करने और अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए सहायक और प्रेरक वातावरण बहुत आवश्यक है। किशोरावस्था के दौरान भावनाएं स्पष्ट रूप से पहचान और आदर्शों का आधार बन जाती हैं। जैसे ही उनका भावनात्मक जीवन बदलता है और भावनात्मकता के बारे में जागरूकता बदलती है, वैसे ही किशोर आदर्शों, लोगों और करियर के प्रति विविध और गहन जुड़ाव बनाना शुरू कर देते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सुचि

- [1] फेयर्स, जे., निकोल्स, डब्ल्यू.डी., और रिकेलमैन, आर.जे. (2000)। पहली कक्षा में सक्षम पाठक विकसित करने में माता-पिता की भागीदारी का प्रभाव। मनोविज्ञान पढ़ना, 21, 195-215।



- [2] फैन, एक्स.टी., और चेन, एम. (2001)। माता-पिता की भागीदारी और छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धिरू एक मेटा-विश्लेषण। शैक्षिक मनोविज्ञान समीक्षा, 13, 1-22.
- [3] फेनस्टीन, एल एंड सिमंस, जे (1999) अटेनमेंट इन सेकेंडरी स्कूलरू ऑक्सफोर्ड इकोनॉमिक पेपर्स, 51।
- [4] फिन, जे.डी. (1998)। माता-पिता की व्यस्तता जो फर्क लाती है। शैक्षिक नेतृत्व, 55(8), 20-24.
- [5] फ्रैंकलिन एन. ग्लोज़ाह (2013)रू घाना में किशोरों के मनोवैज्ञानिक कल्याण पर मानसिक स्वास्थ्य और कथित सामाजिक समर्थन का प्रभाव।
- [6] फ्रीडमैन, सारा आर.; रैपोर्ट, लिसा जे.; लुमली, मार्क (2003) वयस्कों के ध्यान-अभाव/अतिसक्रियता विकार में सामाजिक और भावनात्मक क्षमता के पहलू, न्यूरोसाइकोलॉजी, खंड 17(1), जनवरी 2003, 50-58।
- [7] गैलोवे, जे., और शेरिडन, एस.एम. (1994)। केस स्टडीज के माध्यम से वैज्ञानिक प्रथाओं को लागू करनारू होम-स्कूल हस्तक्षेप और परामर्श का उपयोग करने वाले उदाहरण। जर्नल ऑफ स्कूल साइकोलॉजी, 32 (4) 385-413।
- [8] गार्नर, पामेला डब्ल्यू. (2006) अफ्रीकी अमेरिकी प्रीस्कूलरों में मातृ व्यवहार से पेशेवर और भावनात्मक क्षमता की भविष्यवाणी, सांस्कृतिक विविधता और जातीय अल्पसंख्यक मनोविज्ञान, खंड 12(2), अप्रैल 2006, 179-198।
- [9] जेलमैन, सी. आर. (2004)। फील्ड प्लेसमेंट में प्रवेश करने वाले फाउंडेशन-ईयर एमएसडब्ल्यू छात्रों द्वारा अनुभव की गई चिंतारू प्रवेश, पाठ्यक्रम और फील्ड शिक्षा के लिए निहितार्थ। जर्नल ऑफ सोशल वर्क एजुकेशन, 40, 39-54।
- [10] गोंजालेज, ए.एल. और वोल्टर्स, सी.ए. (2006)। गणित में पेरेंटिंग प्रथाओं और उपलब्धि प्रेरणा के बीच संबंध, जर्नल ऑफ रिसर्च इन चाइल्डहुड एजुकेशन, 21, (2), 203- 218।
- [11] ग्रिफ़िथ, जे. (1996). छात्र शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ माता-पिता की भागीदारी, सशक्तिकरण और स्कूल की विशेषताओं का संबंध। जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 90, 33-41।
- [12] ग्रोलनिक, डब्ल्यू.एस., रयान, आर.एम., और डेसी, ई.एल. (1991)। स्कूल के प्रदर्शन के लिए आंतरिक संसाधनरू अपने माता-पिता के प्रति बच्चों की धारणाओं के प्रेरक मध्यस्थ। जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी, 83, 508-517।